

नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ सुवर्णं चतुर्था
शुद्धं ॥ सुगन्धं चतुर्था शुद्धं चतुर्था
सुगन्धं चतुर्था शुद्धं चतुर्था शुद्धं चतुर्था
सुगन्धं चतुर्था शुद्धं चतुर्था शुद्धं चतुर्था ॥ ॥
नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ सुवर्णं चतुर्था

वनेश्वागविनागइयिमाभनिषर्कः
श्रीयोगविमुखनाश्चननप्रमूषद्वय
॥ दहहवनशीयोगाम्बनश्चनमाभिरु
॥ ॐ ॥ नागवसक्त ॥ अट्टसिक्कसुमशक्ति
मनिमकूटविहविना ॥ ॐ ॥ नाड

ननाचउज्जानदविनासयिज्जला ॥ ॥
नपादर्मनाश्चसुआलिङ्गयज्जयमहास
वसुइतिरुवसयकनाश्चस्यनिहकयज्ज
॥ मानननुचदर्यः निषिलहकैविप्रहर्क
गगशविनासयि ॥ ॐ ॥ नागविनास ॥ ३

धननइकाश्चनंसहस्रमककासुत्रालिगाः
मनहवनिमकविद्याश्चूषयनिनऊनभाक
चमयुलमधगगाश्चनूषामुननसस्यव
धज्जालिगयप्रमिनिहकाश्चयसूननन
गमाउक्रियवनपयियुनहकाश्चऊ

गिल

ममिच्यंनमिगा ॥ ६०३ ॥ नागवदयि ॥ चक्रिक्
लाचकमवलउषिगः प्रीयनोडनवसिलमालाश्च
चक्रिचक्रीलथियाहस्रविहयिगः गगयकनीनिवन्ध
नाया ॥ ५५ ॥ प्रहसमिहचवनः मान्कालानाः यूग्यना
पश्रीमवललाया ॥ ५६ ॥ वज्रकनोटकहाथधनियाः क



[illegible]

मलि धनि वरिजिनि महायति स भवद्वार सर्वसत्त्वना भद्रं हं
 स्वाहा ॥ अथ नि स च आ म रु न ध उ मि ल स आत्मा न द्वा न धा
 न ज नि त ख रू ख न सा हा सि द्ध न ति य व ॥ दानं गम मयं
 च स हि र्मां ॥ लख स हि र्मां गव मय न व ति ला ॥ ॥ सि लं ३
 मा ऋ नां ॥ सि ल स मा न व यू य ॥ क्षा तिः ३ दु र्द वि यी ३

सिद्धादयः स्यान्निर्वादिः कियत्तगस्यानाच्छेदः ॥ ॥

नं॥ पद्मकमलरश्मिप्राप्तयथाय॥ ध्यानं

॥ चक्रवर्त्तु नक्षत्रा नद्याय ॥ ॥

॥ लखावानलास्यउवालाइयिजा ॥ ॥

प्रवृत्तलक्षणकुलामृतिममूर्त्ति ॥ ॥ धृति

नाष्टः मूर्तिमल्लदयका ॥ ॥ हवतु

वाग्विनिमूकः॥॥सुवर्धुगुनः॥

॥ गमसूक्तं ॥ ॥ एतमनुविदिष्य च

॥ देवमनूष्यसमहाङ्गसङ्गस्य च ॥

॥ धनकनकसमृद्धौ जय नमो ॥